आज जब दुनिया अफ्रीका को देखती है तो सबसे पहले दो बातें सामने आती हैं—उसकी गरीबी और उसका गहरा विश्वास। अफ्रीका वास्तव में अद्वितीय है, क्योंकि किसी और महाद्वीप में इतनी बड़ी संख्या में लोग नहीं हैं जो आज भी पूरे मन से परमेश्वर में विश्वास रखते हों।

अफ्रीका की वास्तविक स्थिति को समझने के लिए हमें बाइबिल की दृष्टि से देखना होगा। तभी हम समझ पाएँगे कि हमें, अफ्रीकी होने के नाते, विश्वास और उद्देश्य में कहाँ खड़ा होना चाहिए।

1. अफ्रीकी गरीबी की गलत समझ

बहुत से लोग जो परमेश्वर को नहीं जानते या बाइबिल को नहीं पढ़ते, यह मानते हैं कि अफ्रीका की गरीबी आलस्य या अज्ञानता के कारण है। लेकिन सच्चाई यह है कि दुनिया में और भी समुदाय हैं जहाँ लोग कम परिश्रमी हैं, फिर भी वे बहुत अधिक समृद्ध हैं।

इतिहास गवाही देता है कि अफ्रीका कभी सभ्यता का पालना था। बाइबिल और इतिहास दोनों इस बात की पुष्टि करते हैं। मिस्र और इथियोपिया के पिरामिड आज भी उस उन्नत ज्ञान का प्रमाण हैं जो आज तक पूरी तरह समझा नहीं गया। यह दिखाता है कि अफ्रीकी मूल रूप से अज्ञानी नहीं हैं।

कैसे परमेश्वर ने अफ्रीका को मारा और चंगा किया

2. अफ्रीका के दुःख का बाइबिलीय कारण

बाइबिल बताती है कि अफ्रीका को कमजोरी और दमन का सामना करना पड़ा क्योंकि उसके लोगों ने झूठे देवताओं, मूर्तियों, जादू- टोने और टोने-टोटके पर भरोसा किया। इसका वर्णन यशायाह 19 और यहेजकेल 29 में मिलता है।

यशायाह 19:3 – “मिस्रियों का मन विचलित हो जाएगा, और मैं
उनकी युक्ति को नष्ट कर दूँगा; और वे मूर्तियों, जादूगरों, ओझाओं और टोने-टोटके करने वालों से पूछेंगे।”

बाइबिल में जब मिस्र का उल्लेख होता है, तो अक्सर वह पूरे अफ्रीका का प्रतीक माना जाता है।

यहेजकेल 29:12-15 – “मैं मिस्र को उजाड़ देशों में से एक बना दूँगा, और उसके नगर चालीस वर्ष तक सुनसान पड़े रहेंगे…
चालीस वर्ष के बाद मैं मिस्रियों को उन जातियों में से इकट्ठा करूँगा जहाँ-जहाँ वे तित्तर-बित्तर किए गए। मैं उन्हें उनके जन्मस्थान पातरोस देश में लौटा दूँगा। वहाँ वे एक छोटा और नीचा राज्य होंगे। राज्यों में सबसे छोटा वही

होगा और फिर कभी अन्य राष्ट्रों से ऊपर नहीं उठेगा। मैं
उन्हें इतना कम कर दूँगा कि वे फिर कभी राष्ट्रों पर
प्रभुता न करेंगे।”

यह भविष्यवाणी पूरी हुई। अफ्रीका ने सदियों तक दासता और उपनिवेशवाद सहा, लगभग 400 वर्षों तक—कुछ वैसा ही जैसा इस्राएल ने मिस्र में झेला। परमेश्वर ने आत्मिक उद्देश्य पूरा करने के लिए अफ्रीका को “अन्य राष्ट्रों से छोटा” होने दिया।

3. परमेश्वर ने ऐसा क्यों किया

यह परमेश्वर का क्रोध या प्रतिशोध नहीं था, बल्कि सुधार और दिशा देने का साधन था। अफ्रीका ने मूर्तियों, टोने-टोटके और जादू पर भरोसा किया (यशायाह 19:3)। इसलिए परमेश्वर ने उन्हें दुर्बल किया ताकि वे उसी की ओर लौटें।

आज भी कुछ जगहों पर ये परंपराएँ मौजूद हैं। सोचिए, यदि परमेश्वर ने हस्तक्षेप न किया होता तो अफ्रीका तकनीकी रूप से बहुत आगे निकल सकता था, लेकिन आत्मिक धोखा घातक होता।

परमेश्वर की ताड़ना का उद्देश्य लोगों को उसकी ओर मोड़ना था—और यह हुआ भी। आज उसकी कृपा अफ्रीका में साफ दिखाई देती है।

बहुत से लोग ईमानदारी से परमेश्वर को खोज रहे हैं। दासता और उपनिवेशवाद के अनुभव ने अफ्रीकियों को सच्चे परमेश्वर की खोज की ओर प्रेरित किया।

यशायाह 19:20-25 –
“वह मिस्र देश में सेनाओं के यहोवा के लिये एक चिन्ह और
गवाही होगी। जब वे अपने सताने वालों के कारण यहोवा की दोहाई देंगे, तब वह उनके पास एक उद्धारकर्ता और रक्षक भेजेगा, और
वह उनको छुड़ाएगा।
यहोवा मिस्र पर प्रगट होगा, और उस दिन मिस्री यहोवा को जानेंगे। वे बलिदान और भेंट चढ़ाएँगे, और यहोवा को मन्नतें मानकर उन्हें पूरी करेंगे।
यहोवा मिस्र को मारेगा, पर मारेगा तो भी चंगा करेगा। वे
यहोवा की ओर फिरेंगे, और वह उनकी प्रार्थना सुनकर उन्हें
चंगा करेगा… सेनाओं का यहोवा कहेगा: ‘मेरे लोग मिस्र धन्य हों, अश्शूर मेरा काम, और इस्राएल मेरी विरासत।’”

4. गरीबी ने विश्वास को जन्म दिया

अफ्रीका की गरीबी इसलिए अनुमति दी गई ताकि लोग परमेश्वर की ओर लौटें। दुःख ने आत्मिक धन उत्पन्न किया है।

याकूब 2:5 – “हे मेरे प्रिय भाइयो, सुनो: क्या परमेश्वर ने इस संसार के दीन लोगों को विश्वास में धनी और उस राज्य का अधिकारी होने के लिये नहीं चुना जिसकी उसने अपने प्रेम करने वालों से प्रतिज्ञा की है?”

परमेश्वर ने हमें इन परिस्थितियों में इसलिए रखा ताकि हमारे विश्वास की परीक्षा हो और हम आत्मिक रूप से बढ़ें। फिर भी कुछ लोग उसकी आवाज़ को अनसुना कर देते हैं और अपने जीवन को यीशु को अर्पित नहीं करते। अफ्रीका वह भूमि है जहाँ सुसमाचार खुलकर प्रचार किया जाता है, लेकिन बहुत से लोग इसे हल्के में लेते हैं।

5. कृपा हमेशा नहीं रहेगी

यह कृपा भी स्थायी नहीं है। बाइबिल बताती है कि अन्ततः आत्मिक आशीष इस्राएल को लौटेगी। तब वे राष्ट्र जिन्होंने मूर्तिपूजा को अपनाया था, अन्त समय में मसीह-विरोधी के साथ मिलकर हरमगिदोन की लड़ाई में खड़े हो सकते हैं। कृपा सूर्य की तरह है—उदय होती है और अस्त भी हो जाती है।

कैसे परमेश्वर ने अफ्रीका को मारा और चंगा किया

पर जिन्होंने यीशु मसीह में विश्वास करने की कृपा को स्वीकार किया है, वे बचाए जाएँगे। लेकिन जो लोग संसार की लालसाओं में डूबे रहते हैं, मूर्तिपूजा करते हैं या सुसमाचार का मज़ाक उड़ाते हैं, वे परमेश्वर के न्याय का सामना करेंगे।

हम खतरनाक समय में जी रहे हैं और दुनिया हर दिन बदल रही है। न्याय किसी भी क्षण आ सकता है। क्या आप तैयार हैं? उत्तर आपके हृदय में है।

मरणाथा (आ, प्रभु यीशु!

JIUNGE NA GROUP LETU LA WHATSAPP HAPA >> WHATSAPP GROUP….

Share on:
WhatsApp